आज की मुरली पर विचार-सागर-मंथन ---------- Date: 07-08-14

हम सब में से जिसने भी गीता पढ़ी या सुनी हैं, उसे यह श्लोक – यदा-यदा ही धर्मस्य ग्लानि भवतू भारतम - तो जरूर याद होगा. आज की बाबा की मुरली में बाबा ने हमें यह श्लोक की सही समझ हम बच्चों को दी हैं.

गीता के श्लोक का मतलब होता हैं, जब भारत में धर्म की संपूर्ण ग्लानि हो जाती है तब भगवान इस धरती पर आते है और वापस धर्म की स्थापना करते हैं.

कौन सा धर्म? भारत का ओरिजिनल आदि सनातन दैवी-देवता धर्म.

बाबा ने हम बच्चों को इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हुए समझाया है की सतयुग में यही भारत में जब आदि सनातन दैवी-देवता धर्म था तो यही भारत में सभी मनुष्यों दैवी-गुणों वाले दैवी-देवता थे, जिसमें पवित्रता मुख्य थी. जिस भारत में, सतयुग में, बच्चे भी पवित्रता से पैदा होते थे और आज भी जिस भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर, जो इस काली-कलयुगी दुनिया में भी पवित्र रहता है. जिस भारत के हिमालय को ही दुनिया का सबसे पवित्र स्थान कहा जाता है की जहां द्वापर से अनगिनत सन्यासीओं ने पवित्रता की धारणा कर भारत को और गिरने से बचाया. आज इसी भारत की हालत कैसी हैं यह तो हम सब जानते हैं.

भारत का ओरिजिनल दैवी-देवता धर्म तो द्वापर से ही प्रायः लोप हो जाता है, फिर भी जो देवी-देवताओं की आत्माये सतयुग से चली आती है उसमें पवित्रता 8 से 12 कला तक रहती है जो धीरे-धीरे कम हो कर, अभी कलियुग के अन्त में जीरो कला हो जाती हैं. जब हम सब की आत्माये शूद्र बन जाती हैं. तो हम अपने को दैवी-देवता कहला नहीं सकते, बल्कि अपने ही ओरिजिनल स्वरूप, दैवी-देवताओं के आगे जाकर पैर पड़ते हैं. हम कहते है तुम सर्व-गुण सम्पन्न, सोले कला संपूर्ण...हम नीच-पापी. कैसी विचित्र स्थिति है? इसको ही धर्म ग्लानि कहा जाता हैं. जो मनुष्य अपने धर्म को भूल, भगवान को भी भूल, अपने ही ओरिजिनल स्वरूप को भगवान समझ विविध प्रकार से प्राथनाये, अर्चनाये कर दर-दर भटकता रहता है. इससे बड़ी धर्म ग्लानि क्या हो सकती है?

इसे यही सिद्ध होता है की सत्य गीता ज्ञान दांता, परमपिता-परमात्मा शिव है और यह टाइम भी वही है जब की महाभारत की युद्ध, हम सब आत्माये माया-रावण से करते है और भगवान का साथ लेकर माया-रावण पर विजय पाते है और फिरसे इस धरती पर सतयुग की स्थापना करने में भगवान शिव के सहयोगी बनते हैं.

आज फिरसे हम सब संपूर्ण पवित्रता की प्रतिज्ञा को याद करते है की कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .